http://salfibooks.blogspot.com

आओ!

अल्लाह

की पनाह में

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताये हुए बेशकीमती कलिमात

ये कलिमात ईमान लाने वालों के लिये हर तरह की बीमारी से, बला से, वबा से, शैतानी वस्वसों व असरात से हिफाजत में मुफीद है।

أَعُوْذُ بِاللهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ
مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ مِنْ هَمْزِهٖ
وَنَفْخِهٖ وَنَفْثِهٖ

अऊजुबिल्लाहिस्समीइल अलीमी
मिनश्शैतानिर्रजीमी मिन् हम्जिही
व नफ्ख़िही व नफ्सिही

मैं पनाह में आता हूँ अल्लाह की जो सुनने वाला और जानने वाला है, शैतान मरदूद से, उसके वस्वसे से, उसके फूंक से और उसके थूक से।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ
وَ مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ
فِى الْعُقَدِ وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुलअऊजु बिरब्बिल फ़लक़- मिन् शर्रिमा ख़लक़- व मिन् शर्रिग़ासिकिन इज़ा वक़ब- व मिन् शर्रिन्नफ्फ़ासाति फ़िल उक़द- व मिन् शर्रिहासिदिन इज़ा हसद. (अल् कुरआन : 113, सूरह फलक)

तर्जुमा : कहो मैं पनाह मांगता हूँ सुबह के रब की। हर उस चीज के शर से जो उसने पैदा की है और अंधेरी रात की तारीकी के शर से जब उसका अंधेरा फैल जाये, और गिरोह में फूंकने वालों के शर से और हसद करने वाले की बुराई से जब वो वो हसद करे।

हर फर्ज नमाज के बाद एक मर्तबा और फज्र व मग्रिब के बाद तीन तीन मर्तबा पढ़ें।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ مَلِکِ النَّاسِ اِلٰـهِ النَّاسِ
مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ الۡخَنَّاسِ الَّذِىۡ يُوَسۡوِسُ فِىۡ
صُدُوۡرِ النَّاسِ مِنَ الۡجِنَّةِ وَ النَّاسِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुलअऊजु बिरब्बिन्नास–मलिकिन्नास–इलाहिन्नास–मिन शर्रिल् वस्वासिल् ख़न्नास–अल्लज़ी यौवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नास– मिनल् जिन्नती वन्नास. (अल् कुरआन : 114, सूरह नास)

तर्जुमा : कहो मैं पनाह मांगता हूँ इन्सानों के रब, इंसानों के बादशाह, इंसानों के हक़ीक़ी माबूद की। उस वस्वसा डालने वाले, पीछे हट जाने वाले के शर से, जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालता है ख्वाह वो जिन्न में से हो या इंसान में से।

हर फर्ज नमाज के बाद एक मर्तबा और फज्र व मग्रिब के बाद तीन तीन मर्तबा पढ़ें।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ،
لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ
عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ۔

ला इला–ह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरी–क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर. (सही बुखारी 6402)

तर्जुमा : अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत और उसी की ही तारीफ़ है और वह हर चीज पर पूरी कुदरत रखता है।

(जो शख्स इस कलिमा को सुबह 100 मर्तबा पढ़े वो शाम तक अल्लाह की हिफाजत में रहेगा, जो शख्स इस कलिमा को शाम 100 मर्तबा पढ़े वो सुबह तक अल्लाह की हिफाजत में रहेगा)

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَايَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَىْءٌ
فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَاءِ
وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ۔

बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रु मअ़स्मिही शैउन् फ़िल्अर्ज़ि वला फ़िस्समाइ व–हुवस्समीउ़ल् अ़लीम. (जामेअ़ तिर्मिजीः 3387, अबू दाऊद : 5087)

तर्जुमा : उस अल्लाह के नाम के साथ जिसके नाम के होते हुए कोई चीज नुक़सान नहीं पहुँचा सकती, जमीन की हो या आसमानों की वह खूब सुनने वाला खूब जानने वाला है।

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ
مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ۔

अऊ़ज़ु बि कलिमातिल्लाहित्–ताम्माति मिन शर्रि मा ख़लक़. (स़हीह मुस्लिम : 2708)

तर्जुमा : मैं अल्लाह के पूरे कलिमात के ज़रिये उसकी हिफ़ाजत में आता हूँ उसकी मख़्लूक़ की बुराई से।

(हर शह से हिफाजत के लिये)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ
مِنَ الْبَرَصِ وَالْجُزَامِ وَالْجُنُوْنِ
وَمِنْ سَیِّءِ الْاَسَقَامِ۔

अल्लाहुम्-म इन्नी अऊज़ुबिक मिनल् बरसि वल्जुज़ामि वल्जुनूनि व मिन् सय्यिइल अस्क़ाम. (सुनन अबू दाऊद : 1554)

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूँ बरस की बीमारी से, कोढ़ की बीमारी से, पागलपन की बीमारी से और हर किस्म की बुराई से। हर तरह की बीमारी से शिफा के लिये यह दुआ मुफीद है।

(हर तरह की बीमारी से शिफा के लिये)

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ،
وَالْعَجْزِوَالْكَسَلِ، وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ ،
وَضَلَعِ الدَّيْنِ، وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ۔

अल्लाहुम्-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिनल् हम्मि वल्हज़नि वल्अ़ज्ज़ि वल् क-स-लि वल्जुब्नि वल्बुख़्लि व ज़-ल-अ़द्दैनि व ग़-ल-बतिर्रिजाल.
(स़हीह बुख़ारी : 6369)

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! यक़ीनन मैं तेरी हिफ़ाजत चाहता हूँ परेशानी और ग़म से, कमजोरी और काहिली से और कन्जूसी और बुजदिली से, क़र्ज़ के बोझ और लोगों के जुल्म (अत्याचार) से।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْفَقْرِ
وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْقِلَّةِ وَالذِّلَّةِ
وَاَعُوْذُبِكَ اَنْ اَظْلِمْ اَوْاُظْلَمْ۔

अल्लाहुम्-म इन्नी अऊ़ज़ुबि-क मिनल् फ़क़्रि व अऊ़ज़ुबि-क मिनल क़िल्लति व-ज़्ज़िल्लति व अऊ़ज़ुबि-क अन अज़्लिम औ उज़्लम. (सुनन अबू दाऊद : 1554)

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूँ मुहताजी से और तेरी पनाह में आता हूँ क़िल्लत और ज़िल्लत से और तेरी पनाह में आता हूँ इस बात से कि मैं किसी पर जुल्म करूँ या मुझ पर जुल्म किया जाये।

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ
مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ
وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيٰطِيْنِ وَاَنْ يَّحْضُرُوْنَ۔

अऊज़ु बिकलिमातिल्–लाहित्ताम्माति मिन् ग़ज़बिही व इक़ाबिही व शर्रि इबादिही व मिन हमज़ातिश्शयातीनि व अंय्यहज़ुरून. (जामेअ तिर्मिजी : 3527)

तर्जुमा : मैं अल्लाह के पूरे कलिमात के ज़रिये उसकी पनाह में आता हूँ, उसकी नाराज़ी और उसकी सजा और उसके बन्दों की बुराई से और शैतान के वस्वसा डालने (गुनाहों पर उभारने और उकसाने) और उनके मेरे पास आने से।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ الْعَفْوَوَالْعَافِيَةَ فِىْ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ الْعَفْوَوَالْعَافِيَةَ، فِىْ دِيْنِىْ وَدُنْيَاىَ وَاَهْلِىْ، وَمَالِىْ، اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِىْ وَاٰمِنْ رَّوْ عَاتِىْ، اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِىْ مِنْ م بَيْنِ يَدَىَّ، وَمِنْ خَلْفِىْ، وَعَنْ يَّمِيْنِىْ، عَنْ شِمَالِىْ، وَمِنْ فَوْقِىْ، وَاَعُوْذُ بِعَظْمَتِكَ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِىْ۔

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलुकल् अ़फ़्-व वल् आ़फ़िय-त फ़िद्दुन्या वल् आख़िरति, अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलुकल् अ़फ़्-व वल् आ़फ़िय-त फ़ी दीनी व दुन्या-य व अह्ली व माली, अल्लाहुम्मस्तुर् औ़राति व अमिर्रव्आ़ति अल्लाहुम्मह्फ़ज़्नी मिम्बैनि यदय्-य व मिन ख़ल्फ़ी व अ़य्यमीनि व अ़न शिमाली व मिन फ़ौक़ी व अऊ़ज़ु बिअ़ज़्मति-क अन् उग़्ता-ल मिन तह्ती. (अबू दाऊद : 5073)

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझसे दुनिया और आख़िरत में माफ़ी और आ़फ़ियत का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझसे माफ़ी और आ़फ़ियत का सवाल करता हूँ अपने दीन और दुनिया और अपने घर वालों और माल में। ऐ अल्लाह! मेरी पर्दा वाली बातों पर पर्दा डाल दे और मेरे ख़ौफ़ और घबराहट को सुकून से बदल दे, ऐ अल्लाह! तू मेरी हिफ़ाजत कर मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरे दाएं से और मेरे बाएं से और मेरे ऊपर से, और मैं तेरी अ़जमत की पनाह चाहता हूँ इस बात से कि अचानक अपने नीचे से हलाक (बर्बाद) किया जाऊँ।

اَللّٰهُمَّ نْتَ رَبِّىْ لَااِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِىْ وَاَنَاعَبْدُكَ،
وَاَنَاعَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَااسْتَطَعْتُ، اَعُوْذُبِكَ مِنْ
شَرِّمَا صَنَعْتُ، اَبُوْءُلَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَىَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِىْ،
فَاغْفِرْلِىْ فَاِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ۔

अल्लाहुम्-म अन्-त रब्बी ला इलाह-ह इल्ला अन्-त ख़लक़्तनी व अ-न अ़ब्दु-क व अ-न अ़ला अ़ह्दि-क व वअ़्दि-क मस्ततअ़्तु अऊज़ुबि-क मिन शर्रि मा स़नअ़्तु अबूउ लक बिनिअ़्मति-क अ़लय्य व अबूउ बिज़म्बी फ़ग्फ़िरली फ़इन्नहू ला यग्फ़िरु-़ज्ज़ुनू-ब इल्ला अन्त. (स़हीह बुख़ारी : 6305)

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! तू मेरा रब है, तेरे सिवा कोई (सच्चा) माबूद नहीं, तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूँ और मैं अपनी ताक़त भर तेरे अ़हद और वादे पर क़ायम हूँ। मै पनाह में आता हूँ अपनी की हुई बुराई से। अपने ऊपर तेरे ईनाम का इक़रार करता हूँ और मैं अपने गुनाह का इक़रार करता हूँ इसलिये तू मुझे माफ़ कर दे। क्योंकि तेरे सिवा कोई भी गुनाह माफ़ नहीं कर सकता।

(इस दुआ़ को सय्यदुल इस्तिग़फ़ार कहा जाता है।)

اَللّٰهُمَّ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ، رَبَّ كُلِّ شَىْءٍ وَّمَلِيْكَهُ، اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِىْ وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ، وَاَنْ اَقْتَرِفَ عَلٰى نَفْسِىْ سُوْءً اَوْ اَجُرَّهُ اِلٰى مُسْلِمٍ۔

अल्लाहुम्-म आ़लिमल् ग़ैबि वश्शहा-दति फ़ातिरस्समावाति वल् अर्ज़ि रब्ब कुल्लि शैइंव्-व मली-कहू, अश्हदु अल्ला इला-ह इल्ला अन्-त अऊ़जु़बि-क मिन शर्रि नफ़्सी व मिन शर्रिश्शैतानि व शिरकिही व अन अक्तरि-फ़ अ़ला नफ़्सी सूअन् औ अजुर्रहू इला मुस्लिम. (सुनन अबू दाऊद : 5082, जामेअ़ तिर्मिजी : 3391-3528)

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! ग़ैब (छिपे हुए) और हाज़िर के जानने वाले! आसमानों और जमीन को बेमिस़ाल पैदा करने वाले! ऐ हर चीज के पालनहार और मालिक! मैं गवाही देता हूँ कि (सच्चा माबूद तू ही है, मैं तेरी पनाह में आता हूँ अपने नफ़्स की बुराई से, शैतान की बुराई से, उसकी साझेदारी से और इस बात से कि अपने ही ख़िलाफ़ कोई बुरा काम करूँ या किसी मुसलमान के ख़िलाफ़ कोई बुरा काम करूँ।

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ
مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّهَامَّةٍ
وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَّامَّةٍ.

अऊ़ज़ु बिकलिमातिल्–लाहित्ताम्माति मिन कुल्लि शैतानिंव्–व हाम्मति व मिन कुल्लि ऐ़निल्–लाम्मति. (बुख़ारी : 3371)

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआ़ला के तमाम कलिमात के ज़रिये उसकी पनाह में आता हूँ शैतान से, ज़हरीले जानवर से और हर मलामत करने वाली आँख की बुराई से।

(नजरे–बद से हिफाजत के लिये मख्सूस)

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ
وَاَنَا اَعْلَمُ، وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا اَعْلَمُ۔

अल्लाहुम्-म इन्नी अऊ़जु़बि-क अन् उशि्र-क बि-क व अ-न अअ्लमु व अस्तग्फ़िरु-क लिमा ला अअ्लमु.
(शरह स़हीह अल्अदबुल मुफ़्रद : 551)

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! मैं इस बात से तेरी हिफ़ाजत में आता हूँ कि मैं जानते हुए किसी को तेरा शरीक (साझीदार) ठहराऊँ और मैं तुझसे उस (शिर्क) की माफ़ी चाहता हूँ जो मैं नहीं जानता।

(शिर्क से बचने के लिये यह कलिमात पढ़ते रहें)

بِسمِ اللّٰهِ

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ

شَرِّ مَااَجِدُ وَاُحَاذِرُ۔

बिस्मिल्लाह (3 मर्तबा) अऊ़ज़ुबिल्लाहि व कुदरतिही मिन शर्रि मा अजिदु व उहाजिरु. (7 मर्तबा) (स़हीह मुस्लिम : 2202)

तर्जुमा : अल्लाह के नाम से शुरू। मैं अल्लाह तआ़ला की कुदरत की हिफ़ाजत में आता हूँ उस चीज की बुराई से जो मैं महसूस करता हूँ और जिसका मुझे डर है।

(जिस्म में जिस जगह दर्द हो, वहां हाथ रखकर यह दुआ पढ़ें।)

رَبِّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ۔
وَاَعُوْذُبِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ۔

रब्बि अ़ऊ़जु़बिक मिन् हमज़ातिश्शयातीन. व अ़ऊ़जु़बिक रब्बि अंय्यहजु़रून. (सूरह मोमिनून : 97–98)

तर्जुमा : ऐ मेरे परवरदिगार! मैं हमज़ाद शैतानों के वस्वसों से तेरी पनाह चाहता हूँ। और ऐ रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि वह मेरे पास आ जायें।

اَللّٰهُمّ عَافِنِىْ فِىْ بَدَنِىْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ سَمْعِىْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ بَصَرِىْ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْكُفْرِ، وَالْفَقْرِ، وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، لَااِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ۔

अल्लाहुम्-म आफ़िनी फ़ी ब-द-नी, अल्लाहुम्-म आफ़िनी फ़ी सम्‌अ़ी अल्लाहुम्-म आफ़िनी फ़ी ब-स़-री, ला इला-ह इल्ला अन्-त, अल्लाहुम्-म इन्नी अऊ़ज़ुबि-क मिनल् कुफ़्रि वल्फ़क़्रि व अऊ़ज़ुबि-क मिन अ़ज़ाबिल् क़ब्रि, ला इलाह-ह इल्ला अन्-त. (सुनन अबी दाऊद : 5089)

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! मुझे आ़फ़ियत (आराम) दे मेरे बदन में, ऐ अल्लाह! मुझे आ़फ़ियत दे मेरे कानों में, ऐ अल्लाह मुझे आ़फ़ियत दे मेरी आँखों में, तेरे सिवा कोई (सच्चा) माबूद नहीं। ऐ अल्लाह! यक़ीनन मैं तेरी हिफ़ाजत में आता हूँ कुफ़्र और मुहताजी से और मैं तेरी हिफ़ाजत में आता हूँ क़ब्र के अ़जाब से, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।

اَعُوْذُبِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ الَّتِى لَا يُجَاوِزُ هُنَّ رٌّ وَّلَافَاجِرٌ مِّنْ
شَرِّ مَاخَلَقَ، وَبَرَأَ وَذَرَأَ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ، وَمِنْ
شَرِّمَا يَعْرُجُ فِيهَا، وَمِنْ شَرِّمَاذَرَأَفِى الْأَرْضِ، وَمِنْ شَرِّ مَا
وَمِنْ شَرِّفِتَنِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ، وَمِنْ شَرِّ كُلِّ طَارِقٍ ،يَخْرُجُ مِنْهَا
إِلاَّطَارِقاً يَطْرُقُ بِخَيْرٍ يَارَحْمَنُ.

अऊ़ज़ु बि-कलिमातिल्लाहित्-ताम्मातिल्लती ला युजाविज़ुहुन्-न बर्रूंव्-वला फ़ाजिरुम्मिन् शर्रि मा ख़लक़ व बर-अ व ज़र-अ व मिन शर्रि मा यन्ज़िलु मिनस्समाइ व मिन शर्रि मा यअ्रुजु फ़ीहा, व मिन शर्रि मा ज़र-अ फ़िल्अर्ज़ि, व मिन शर्रि मा यख़्रुजु मिन्हा व मिन शर्रि फ़ि-त-निल्लैलि वन्नहारि व मिन शर्रि कुल्लि तारिक़िन् इल्ला तारिक़ंय्यत्रुकु बिख़ैरिय्या-रह्मान. (मुस्नद अहमद 3/419)

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआ़ला के उन पूरे कलिमात के ज़रिये उसकी पनाह में आता हूँ जिनसे आगे कोई नेक और बुरा नहीं गुजर सकता, हर उस चीज की बुराई से जिसे उसने पैदा किया, उसे बनाया और फैलाया और उस चीज की बुराई से जो आसमान से उतरती है और उस चीज की बुराई से जो उसमें चढ़ती है और उस चीज की बुराई से जिसे उसने जमीन में फ़ैलाया और उस चीज की बुराई से जो उससे निकलती है और रात-दिन के फित्नों की बुराई से और रात के वक्त हर आने वाले की बुराई से सिवाये ऐसे कि जो भलाई के साथ आये। ऐ बहुत ज्यादा रहम करने वाले।

اللّٰهُمَّ إِنِّی أعُوْذَبِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ
وَأعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ
وَأعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ
اَللّٰهُمَّ إِنِّی أعُوْذُبِکَ مِنَ الْمَأثَمِ وَالْمَغْرَمِ

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ुबिका मिन् अज़ाबिल क़ब्रि व अऊज़ुबिका मिन् फ़ितनतिल् मसीही दज्जाल व अऊज़ुबिका मिनल् मह्या वल् ममात व अऊज़ुबिका मिनल् मअ्समी वल् मग़्रमी. (बुखारी : 832, मुख्तसर सहीह मुस्लिम अल अलबानी : 306)

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ क़ब्र के अज़ाब से और मैं तुझसे पनाह चाहता हूँ मसीह दज्जाल के फ़ित्ने से और मैं तुझसे पनाह चाहता हूँ ज़िन्दगी और मौत के फ़ित्ने से और मैं पनाह चाहता हूँ गुनाह से और क़र्ज़ से।

اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّاسِ، اَذْهِبِ الْبَاْسَ،
اِشْفِ اَنْتَ الشَّافِىْ، لَاشِفَاءَ اِلَّا شِفَاءُكَ
شِفَاءً لَّايُغَادِرُسَقَمًا۔

अल्लाहुम्-म रब्बन्नास अज़्हिबिल बअ्स इशिफ़् अन्तश्शाफ़ी ला शिफ़ाअ इल्ला शिफ़ाउक शिफ़ाअल्ला युग़ादिरु सक़्मा. (सही बुखारी : 5743)

तर्जुमा : ऐ लोगों के पालने वाले! तू दूर कर दे बीमारी और तू शिफ़ा दे, तू ही शिफ़ा देने वाला है, तेरे अ़लावा कोई शिफ़ा देने वाला नहीं है, ऐसी शिफ़ा दे कि कोई बीमारी पास न आये।

(इसे दुआ-ए-शिफा कहा जाता है।)

नोट :

- अपने घर की हिफाजत के लिये सूरह बक़रह पढ़नी चाहिये। (हदीस)
- हर नमाज के बाद आयतल कुर्सी पढ़ने वाले इंसान को जन्नत में जाने से सिर्फ मौत ही रोके हुए है। (हदीस)